रिकार्ड–मुझे प्यार की जिंदगी देने वाले.....ओमशांति प्रातःक्लास 22.12.67
ओमशांति। रुहानी बाप रुहानी बच्चों, आत्माओं को समझाते हैं। आत्मा कहां निवास करती है?तख्त पर। यह बड़ा तख्त है ना। भृकुटि जैसे बैठने की उनकी कुर्सी है। है बहुत छोटी। यह ज्ञान बाप ही सिखलाते हैं। बाप कहते हैं बच्चे तुमने आधा कल्प भक्ति ही की है। वह कोई पढ़ाई नहीं है। यह तो पढ़ाई है। एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। भक्ति मार्ग में एम ऑब्जेक्ट होती नहीं। उनके लिए हम कोई से डिबेट नहीं कर सकते। भल कोई भी धर्म वाला हो, हम तो उनकी आत्मा को ही देखेंगे। आगे शरीर को देखते थे। अब आत्मा को देखने से कहेंगे हम भाई को देखते हैं। और कोई सम्बंध नहीं। और सम्बंध देखने से क्रिमिनल आई काम करेगी। भाई अर्थात् आत्मा समझने से क्रिमिनल आइ काम नहीं करेगी। हम भी आत्मा,यह भी आत्मा है। आत्मा ही आर्गन्स द्वारा बोलती है अथवा सुनती है। आत्मा के सिवाय दूसरी कोई बात याद ही नहीं आवेगी। बाप कहते हैं दे हके सभी सम्बंधियों को छोड़ अपन को आत्मा दूसरे को भी आत्मा देखना पड़े। यह प्रैक्टिस पक्की करनी है। पुरुषार्थ बिगर इतना उंच पद थोड़े ही मिल सकता है। मैं आत्मा हूं यह अच्छी रीत पक्का करना है। ज्ञान है ही बिल्कुल अलग। शंकराचार्य तुमको कहते हैं शास्त्रार्थ करो। अब इसमें शास्त्रार्थ करने की बात ही नहीं। यह तो पढ़ाई है ना। पढ़कर नर से नारायण बनना है। अमरपुरी में जाना है। इसके लिए पुरुषार्थ करना है या बैठकर शास्त्रार्थ करना है। पढ़ाई में कब डिबेट होती है क्या? वह लोग ड्रामा को तो बिल्कुल ही जानते नहीं। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। जिससे फिर हम आधा कल्प सुख पाते हैं। जो शिवबाबा हमको पढ़ा रहे हैं उनकी तुम बैठ पूजा करते हो। शिवबाबा ने इस पर मुरली भी चलाई थी। उनको समझना चाहिए जिस शिवबाबा को तुम पूजते हो वह तो ज्ञान का सागर है। हमको पढ़ा रहे हैं। वह ही नर से नारायण बनाने वाला है। उनकी पहले2 भक्ति भी अव्यभिचारी होती है। अभी हम उन द्वारा पढ़कर पुरुषार्थ कर रहे हैं। लिखना चाहिए ना। ... ...वह नहीं पढ़ेंगे। कोई न कोई उनके प्राइवेट सेक्रेटरी आदि पढ़ेंगे। बोलो, हम जानते हैं यह बिचारे भूले हुए हैं। हमने शुरू में अव्यभिचारी पूजा की। अभी तो व्यभिचारी पूजा करते रहते। वह शिवबाबा हमको पढ़ाकर कहते हैं मन्मनाभव। देह के सर्व सम्बंध छोड़ो। पतित–पावन मैं ही हूं। तुम उनकी पूजा करते हो। वह हमको पढ़ा रहे हैं। राजयोग सिखला रहे हैं ;परंतु अभी देरी है। अभी उन्हों के कान पर इतना नहीं पड़ेगा ;क्योंकि अभी तो उन्हों का राज्य है ना ; क्योंकि अभी तो उन्हों का राज्य है ना। तुम जानते हो यह भक्ति खतम हो जाती है। अभी अगर तुम उन्हों को ज्ञान दो तो प्रेजीडेंट आदि सब कहेंगे वाह ब्रह्माकुमारियां इन्हों को ज्ञान देती हैं। ढेर के ढेर तुम्हारे पास आ जावेंगे ;क्योंकि वह तो फिर भी सन्यासी हैं। वह गृहस्थी है। तुमने सन्यासी को जीत लिया बाकी क्या चाहिए। इन्हों को पिछाड़ी में तुमने ज्ञान दिया है। अभी तुम कोई बड़े मठ वाले को ज्ञान दो और इस तरफ आ जाये तो बहुत नाम हो जाये। मनुष्य ही मूंझ जाये। रिवोल्यूशन हो जाये। बाप कहते हैं इन बिचारों को कोई दोष नहीं है। मैं ही आय कर तुम बच्चों को यह बातें सुनाता हूं। इसमें डिबेट आदि करने की तो दरकार ही नहीं। यह है पढ़ाई। तुम्हारा है नारायणी नशा। मनुष्यों को तो है धन का नशा। गायन भी है किनकी दबी रही धूर में.....वह समय अभी आ रहा है। सफल होगी उनकी जो नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ करेंगे। यह तो पुरानी दुनियां खतम हो जानी है। सन्यास का वास्तव में अर्थ ही हाथ खाली करना। वह तो घर से ही बाहर चले जाते हैं। पैसा आदि नहीं ले जाते हैं। जाकर सन्यासी ड्रेस पहन लेते हैं। अहमदाबाद में ऐसे बहुत स्थान हैं सन्यासियों के लिए भण्डारा लगा पड़ा है। उन्हों को बहुत माल मिलती रहती है। इस दुनियां से वैराग्य आ जाता है। तुम्हारे (पास) तो बहुत ताकत है। आधा कल्प लिए तुमको बहुत धमन मिल जाता है। उनमें इतनी ताकत नहीं तो धन भी नहीं मिलता। यह भी जब तमोप्रधान बन जाते हैं तो फिर लौट कर शहर में आ जाते हैं। उनको पकड़ सकते हो ;पंरतु सब हैं

जैसे जट लोग। ज्ञान का उन्हों को पता ही नहीं है। यह भी तुम जानते हो पढ़े हुए आगे अनपढ़े भड़ी ढोवेंगे। ल.ना. के चरणों में सब झुकते हैं ना। उनसे जाय धन मांगते हैं। जरूर उन्होंने पढ़कर इतना उंच पद पाया है जो अभी तक मनुष्य उनसे भीख मांगते रहते हैं। कितना उंचा पद है। इसमें साहस भी चाहिए। जीते जी मरना है। घर में बैठे हुए सब कुछ छोड़ देना, भुलाय देना इसको मरना कहा जाता है। बाबा यह सब कुछ आपका है। सबको मरना तो है ही। सभी की वाणप्रस्थ में जाने की अवस्था है। यहां तो अकाले भी मर जाते हैं। वहां अकाले मृत्यु कब होती नहीं। मृत्यु का नाम ही नहीं होता। वहां है ही अमरलोक। कोई मरता नहीं। मनुष्य वंडर खावें। मरेंगे नहीं तो तब जावेंगे कहां? तुम कहेंगे योगबल से वहां एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। कहेंगे यह भी तो शरीर छोड़ना हुआ ना ;परंतु किस युक्ति से छोड़ते हैं यह भी समझने की बात है। तुमने अब समझा है। बाप है ही गरीब निवाज। तो पहले गरीब अबलायें ही आती हैं। अबलाओं को बल देने वाला है बाप। आजकल तो मनुष्य अपन को कितना बलवान समझते हैं। गवर्मेंट को भी पत्थर मारने देरी नहीं करते। इस स्थापना में भी बाप को कितना विघ्न पड़ता है। यह सब ड्रामा में नूंध है। बाप को कोई खयाल नहीं होता। समझते हैं यह नई बात नहीं। सेकेंड व सेकेंड जो कुछ होता है 5000वर्ष पहले भी हुआ था। नथिंग न्यू। म्यूजियम स्थापन किया है। नथिंग न्यू। 5000वर्ष पहले भी राजाई स्थापन किया था। इसके लिए यह म्यूजियम रचा था श्रीमत पर। बाबा यह बात बहुत वर्षों से कहते आते हैं। यह म्यूजियम में जरूर लिख दो। अखबार में पड़ता है। 100वर्ष आगे यह हुआ था। हम कहते हैं 5000वर्ष पहले यह हुआ था। कितना फर्क हो जाता है ;परंतु मनुष्यों की है पत्थर बुद्धि। समझते नहीं। वह फिर तुमको चर्या समझते हैं। तब तो गाली आदि देते हैं। सुनी–सुनाई बातें तो बहुत हैं ना। कहते हैं कृष्ण ने भगाया। यह थोड़े ही पता है कि भगाया पटरानी बनाने। अभी तो तुम समझती हो हम विश्व के महारानी बन रहे हैं। बाकी तुम भागे विकार के कारण। और कोई बात नहीं थी। तो यह सब बाप ही बच्चों को समझाते हैं। ड्रामा के आदि,मध्य,अंत को तुम ही जानते हो। और कोई भी बिचारे शंकराचार्य अथवा राजायें आदि कुछ भी नहीं जानते। दुनियां में तो अनेक प्रकार के ढेर मत हैं। यहां तुमको मिलती है एक मत। यह किसको भी पता नहीं है परमपिता परमात्मा शिव ज्ञान का सागर है। पतितों को पावन बनाने वाला है। तो यह भी समझानी देनी पड़े। बाप कहते हैं मनमनाभव। यह नालेज तुम कोई को भी दे सकते हो। बोलो, तुम तो आत्मा हो। अच्छे वा बुरे संस्कार आत्मा में ही होते हैं, जिसको ही फिर भोगना होता है। सतयुग में भोगना की बात नहीं होती। वहां भोगना से कैसे छूटते हैं सो बाप समझाते हैं। शास्त्रों में तो कंस आदि की बातें कितनी बैठ बनाई हैं। आगे तुम भी कुछ नहीं जानते थे। बाप कहते हैं तुम अपने अंदर से पूछो हम क्या थे। बिल्कुल ही डर्टी ब्रूट्स थे। इन देवताओं के(को) मानते थे आप सर्वगुण सम्पन्न.....हम नीच पापी हैं। आगे तो भक्ति भी बेसमझ की करते थे। अभी तो समझ मिली है। बाप कहते हैं यह है आसुरी सम्प्रदाय। सब रौरव नर्कवासी हैं। रौरव नर्क कलियुग के अंत को कहेंगे। सभी पापात्माएं हैं। बिच्छु–टिंडन ,नाग–बलायें आदि हैं। कितना एक/दो को दुःख देते हैं। यह हैं ही शैतान आसुरी सम्प्रदाय। तुम अभी बनते हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। फिर बनेंगे देवी सम्प्रदाय। अभी स्मृति आई है। अभी (संगमयुग पर फिर) पुरुषोत्तम बन रहे हैं। आसुरी सम्प्रदाय (में) हम हैं नहीं। वह हैं बगुले। तुम हो हंस मोती चुगने वाले। दोनों इकट्ठे रह न सकें। ब्राह्मण बच्चों में भी कब2 लून–पानी हो पड़ते हैं। बाप कितना समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। दूसरे को भी आत्मा देखो ;परंतु यह टेव न होने कारण ज्ञान की धारणा न होने कारण फिर जात–पात के भेद में आ जाते हैं। आत्मा समझते नहीं हैं। आत्मा समझने से कोई जात–पात का भेद नहीं। यह हिंदू है, यह मुसलमान है। बाप कहते हैं देह के सम्बंध को छोड़ अपन को आत्मा समझो। यह मारवारी है, यह फलाना है।

यह निकल जाना है। इसलिए बाप कहते हैं भाई2 देखो। यह टेव पड़ जानी चाहिए। ईश्वरी सम्प्रदाय भाई2 आपस में कैसे लड़ेंगे?बाबा युक्ति बतलाते हैं। सर्जन है ना। तो सर्जन को खयाल रहता है ऐसी दवाई दें जो देहाभिमान छूट जाये। एक/दो को भाई2 अर्थात् आत्मा की दृष्टि से देखें। आत्मा भृकुटि के बीच रहती है। हमको आत्मा को ही ज्ञान देना है। उनको देखना है। जात–पात का भेद निकल जाये। नहीं तो लड़ेंगे,टिप्पणी करेंगे। यह आमिल हैं यह भाई–बहन हैं ;परंतु इसमें तो भाई2 देखना है। यही मेहनत करनी पड़ती है। सन्यासियों को भी तुम समझाय सकते हो ;परंतु समझाने वाले बड़ी होशियार ,पावरफुल चाहिए। योग का जौहर बहुत अच्छा चाहिए। कई बच्चे तो योगबल को पूरा समझते भी नहीं हैं। आत्मा की दृष्टि से एक/दो को देखे तो प्यार भी बहुत रहे। यह तो तुम अभी समझते हो। यह सारी आसुरी भ्रष्टाचारी सम्प्रदाय है ;परंतु अपन को कोई समझते थोड़े ही हैं। तुम भी पहले नहीं समझते थे। पता ही नहीं था श्रेष्ठ कौन होते हैं और कैसे बनते हैं। अभी तुम बन रहे हो ;परंतु कोई के तकदीर में नहीं है तो तदबीर करते ही नहीं। बाप कहते हैं मैं एक रस सेवा सबकी करता हूं। मुझे बुलाया ही है पतितों ने। तब तो कहते हैं हे पतित–पावन आओ हमको सुखधाम में ले चलो। अभी तो तुमको नफरत आती है समझते हो बरोबर हम विष्टा के कीड़े थे। अभी हम निकल आये हैं। यह कालीदह है जहां सर्प–सर्पनियां रहती हैं। कृष्ण के लिए कहते हैं कालीदह में सर्प ने डसा। अब सन्यासी लोग कहते हैं स्त्री सर्पनी है। यह थोड़े ही समझते थे हम भी थे। डसते थे। पहले तो हमने डसने शुरू किया। कालीदह तो है ना। कृष्ण की आत्मा बहुत जन्मों के अंत में थी जबकि सांवरा था। विषय वैतरणी नदी को कालीदह कहेंगे। बाप है भगवान। जानते हैं कौन गुलाब के फूल, कौन अक के फूल हैं। अक के फूल को कोई भी पसंद नही करते। वह जैसे कड़वी फूल है। हाथ लगाओ तो आंख खराब हो जाये। ऐसे अक के फूल हैं। खुद भी समझते हैं हम कांटा हैं। किसको सुख देने वाला नहीं हूं। बेहद के बाप तो हरेक को जानते हैं ना। यह बेहद का टीचर भी है। सभी टीचरों का भी टीचर है। ऐसा कोई टीचर होगा क्या जो कहे कि हम तुमको ऐसा(ल.ना.) बनाता हूं। इनके श्रीमत पर चलते हैं तो मानना चाहिए ना। भगवान का भी न मानेंगे तो बाकी किसका मानेंगे? बाप कहते हैं तुम भाई2 हो ना फिर विकार की दृष्टि क्यों जानी चाहिए?यह टेव बहुत अच्छी रीत डालनी है। महावीर–महावीरनियां को बहुत खबरदार रहना है। काम महाशत्रु है। इस माया रूपी ग्राह से वा मगरमच्छ से बड़ी सम्भाल रखनी है। कहां उनके मुख में न पड़ जाओ। माया बहुत जोर से चमाट लगाये ,बहुत उंच ते उंच विश्व के मालिक बनने से गिराय न दे। सदगुरू बाबा के निंदक न बन जाओ। फिर उंच ठौर पा न सकेंगे। बड़ी भूल से बड़ा घाटा पड़ जावेगा जन्म–जन्मांतर ,कल्प–कल्पांतर का। इसलिए बच्चों को बहुत खबरदार रहना है। इस संगमयुग पर जबकि तुम ईश्वरीय औलाद हो तो आपस में भाई2 का रुहानी प्यार होना चाहिए। सतयुग में जनावर भी कितना प्रेम से चलते हैं। कोई की क्रिमिनल आई नहीं होती जो धोखा खावे। बच्चों को माया से बड़ी खबरदार रहना है। बाबा सावधान रहने लिए तो रोज समझाते रहते हैं। तुम बच्चों को कदम2 पर पदम है अर्थात् तुम पदमपति बन रहे हो। तो खबरदार भी बहुत रहना है। बापदादा बार2 बच्चों को सावधान करते रहते हैं पतित बन अपना दीवाला न मार देना। दिन–प्रतिदिन माया तमोप्रधान अवस्था धारण करती जा रही है। समझना चाहिए हमको कौन श्रीमत देते हैं। मानना चाहिए ना। भाई2 हो। कब भी विकार की दृष्टि न जाये। आत्मा को देखो। भाई2 को देखो। यह टेव पक्के रखो। इसमें ही मेहनत है। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार गुडमार्निंग। एक नया सेंटर बरोदा में खुला है, जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं–

BRAHMA KUMARIS
"RASHMIN''7 CHANDRA NAGAR SOCIETY , BEHIND NAZAR BAGH, BARODA- 6